© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 09 | October – December 2017

भारतीय हिंदी लोकप्रिय सिनेमा और उसका इतिहास

मनोज कुमार, पीएच.डी शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

सार संक्षेप : सिनेमा चाहे वह हमारे देश का हो चाहे प्रदेश का हो, दोनों तरफ के सिनेमाओं का मकसद केवल मनोरंजन करना ही नहीं है बल्कि समाज को सही दिशा प्रदान करना है। समाज और सिनेमा एक दूसरे के पहलू है, क्योंकि जो समाज है वही सिनेमा है। समाज में जो कुछ परिवर्तित होता है उसी रूप में हम सिनेमा को देखते है, और जो सिनेमा में दिखाया जाता है, उसी को देखकर समाज उसमें तब्दील होना चाहता है इसलिए दोनों एक–दूसरे के पूरक है यह कोई अतिश्योक्ति नहीं बल्कि यथार्थ है। सिनेमा कहानी भी है, नाटक भी है, संगीत भी और चित्रकला भी। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि सेल्युलाइड पर लिखे जाने वाले साहित्य की आधुनिकतम विद्या सिनेमा है। सिनेमा द्वारा चित्रों को इस प्रकार एक के बाद एक प्रदर्शित किया जाता है, जिससे गति का आभास होता है। प्रस्तुत पेपर में शोधार्थी द्वारा लोकप्रिय हिंदी सिनेमा के इतिहास को अंगित किया गया है।

मुख्य शब्द : फिल्म, समाज, दर्शक, इतिहास, अभिव्यक्ति, प्रभाव, सरोकार, सेल्युलाइड, इतिहास

''फिल्म एक चित्र है, फिल्म शब्द है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म नाटक है, फिल्म संगीत है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म हजारों अभिव्यक्तिपूर्ण श्रव्य एवं दृश्य आख्यान है।''

–सत्यजीत रे

सिनेमा भूतकाल और वर्तमान काल में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है इसका प्रयोग कला, अभिव्यक्ति एवं शिक्षा के लिए किया जाता है। इसलिए कहा जाता है कि फिल्में समाज पर अपना प्रभाव छोड़ती ही हैं, साथ ही ये समाज का आइना भी होती हैं। इन फिल्मों में निहित सामाजिक सरोकार का उदेश्य समाज में सकारात्मकता का सम्प्रेषण करना होता है। अगर ये कहा जाए कि जिस देश में सिनेमा नहीं होता, वहां के दर्शक अपनी अच्छाइयों, बुराइयों से परिचित नहीं हो पाते, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सिनेमा हमें मनोरंजन के साथ शिक्षा, सहिष्णुता, एकता, अखंडता, सामाजिक संदेश, के साथ जीवन में आगे बढ़ने का संदेश भी देता है। इसके साथ हमें अथक प्रयासों में सफलता हासिल करने के लिए संघर्षमय जीवन जीने की प्ररेणा भी देता है। सिनेमा को जिस भी रूप में हम देखना चाहते है उसी रूप में हमको वह मिलेगा बशर्ते हमारे देखने–परखने का भाव सही होना चाहिए। सिनेमा एक ऐसी कला विधा है, जिसमें कलाकार मुक्त चुनाव और अपनी संवेदनशीलता के द्वारा जीवन और दृशय जगत से आवश्यक सच्चाईयां बटोरकर एक साहित्यकार की भांति उन्हें एक साथ क्रमबद्ध कर एक कृति में बदल देता है। इसी तरह वह हमारे लिए इस विश्व पुनरावलोकन के लिए एक ऐसे पैने दृष्टिकोण का निर्माण करता है, जो हमारे परिवेश और मानस की चेतन–अचेतन अन्तर्निहित सच्चाइयों को उजागर कर देता है।

संसार में सिनेमा का उद्भव एवं विकास

कला मनुष्य की सृजनात्मक सोच और उसकी चेतना के विकास से सीधी तरह जुड़ी होती है। कला के किसी भी विधा का जन्म अचानक नहीं होता। आरंभ में, किसी भी कला का जन्म एक सूक्ष्म रूप में होता है। सूक्ष्मरूप में जन्मी कला का विकास, धीरे–धीरे लोगों की कलात्मक सोच और उस दिशा में उनके द्वारा किए गए सतत प्रयोगों से परिपक्व होती चली जाती है। फिर समय के साथ–साथ वह कला, अपनी पूरी गरिमा और सृजनात्मक फैलाव के साथ मूर्त रूप में उभरकर सामने आती है। सिनेमा कला का आधुनिकतम रूप है। सिनेमा, कला का वह सशक्त माध्यम है जो अपने सशक्त दर्शकों को किसी खास विषय–वस्तु पर आधारित कथा को दिखाता है, बताता है और मनोरंजन करते हुए दर्शकों के ह्रदयों में गहरे उतर जाने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। सिनेमा, कहानी कहने का एक प्रभावशाली माध्यम है। अन्य कई कलाओं की तरह सिनेमा भी देश, काल, सामाजिक संरचना और व्यक्ति की समस्याओं से सीधा जुड़ा रहता है। सिनेमा, कला की कई विधाओं जैसे–साहित्य, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि का मिला–जुला रूप होता है। अर्थात् सिनेमा समग्रता का दूसरा नाम है। सिनेमा भी विश्व की अन्य आधुनिक कलाओं की तरह, मनुष्यों की कलात्मक सोच और उसकी विराट चेतना से निकली अभिव्यक्ति का एक सशक्त तकनीकी माध्यम है।

बच्चन श्री वास्तव ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि सिनेमा के आविष्कार में महत्वपूर्ण प्रयास सिनेमा के आविष्कार के इतिहास में सन् 1833–1835 वर्ष अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। ''सिनेमा के आविष्कार में प्रथम महत्वपूर्ण प्रयास ''जैट्राप'' नामक यंत्र है, जिसका निर्माण 1835 में हुआ। जब इस यंत्र को घुमाया जाता, तब दृष्टा को चित्रों में गीत होने का आभास होता था। सिनेमा के आविष्कार में ससे महत्वपूर्ण भूमिका फ्रांसीसी वैज्ञानिक लुइस डेग्यूरे की है जिन्होंने सन् 1839 ई. में फोटोग्राफिक कैमरे का आविष्कार किया था। 1877 में सेन फ्रांसिसको में फोटोग्राफर ईडवियर्ड माईब्रिज ने एक प्रयोग किया। जिसमें उन्होंने एक पंक्ति में पच्चीस कैमरे लगाकर एक भागते हुए घोड़े के चित्र उतारे। सभी कैमरों के शॅटर एक धागे से एक प्रकार बांधे थे कि जब घोड़ा उन कैमरों के सामने से दौड़ा तब एक के बाद एक धागा टूटता गया तथा शाटर खुलकर बंद होते गए। इस प्रक्रिया में भागते हुए घोड़े के एक के बाद एक पच्चीस चित्र खींच गए। जिसे जोड़ा गया तो लगा कि घोड़ा दौड़ता हुआ दिखाई दिया यह एक अद्भूत प्रयोग था। माइब्रिज के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण आविष्कार सिनेमा के क्षेत्र में टामस एल्वा एडीसन का है। जिसमें 'फोनोग्राफ' और इलैक्टिक बल्व जिनके निरंतर प्रयोगों ने एक निश्चित रूपरेखा तैयार की। जिससे 3 अक्तूबर 1889 को अमेरिका